ईद की नमाज़ का हुक्म और उसका तरीक़ा

[हिन्दी – Hindi – هندي]

मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

حكم وصفة صلاة العيد

« باللغة الهندية »

محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

ईद की नमाज़ का हुक्म और उसका तरीक़ा

आदरणीय शैख मुहम्मद बिन सालेह अल–उसैमीन रहिमहुल्लाह से प्रश्न किया गया कि ईद की नमाज़ का हुक्म और उसका तरीक़ा क्या है ? और उसकी शर्तें और उसका समय क्या है ? ते आप ने यह उत्तर दिया : विद्वानों के राजेह कथन के अनुसार ईद की नमाज़ पुरूषों पर फर्ज़े ऐन है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका हुक्म दिया है और सदैव इसकी पाबंदी की है। यहाँ तक कि जवान लड़कियों, पर्दानशीन औरतों और मासिक धर्म वाली स्त्रियों को ईद की नमाज़ के लिए निकलने का आदेश दिया है, और मासिक धर्म वाली औरतों को नमाज़ पढ़ने की जगह से अलग रहने का आदेश दिया है। और यदि वह इन्सान से छूट जाए तो वह उसकी क़ज़ा नहीं करेगा। क्योंकि वह इजतिमा (सभा और जमाव) वाली नमाज़ है, यदि वह छूट जाएगी तो उसकी क़ज़ा नहीं की जाएगी, जैसे जुमा की नमाज़ यदि छूट जाए तो उसकी कज़ा नहीं की जाती है, लेकिन जुमा की नमाज़ चूँकि ज़ुहर के समय में पड़ती है, इसलिए यदि वह छूट जाए तो इन्सान से ज़ुहर की नमाज़ का मुतालबा किया

जाता है। लेकिन जहां तक ईद की नमाज़ की बात है तो उसके समय में ईद की नमाज़ के अलावा कोई और नमाज़ नहीं है, अतः अगर वह छूट जाए तो उसकी क़ज़ा नहीं की जाएगी, और उसके बदले में कोई अन्य नमाज़ भी नहीं है जो पढ़ी जाए।

जहाँ तक उसमें मसनून व धर्मसंगत बातों का संबंध है तो : उसका तरीक़ा यह है कि वह तकबीर तहरीमा कहे, और इस्तिफताह की दुआ पढ़े, फिर छः तकबीरें कहे, फिर सूरतुल फातिहा और उसके साथ कोई सूरत पढ़े : पहली रकअत में या तो ''सब्बिहिस्मा'' और या तो सूरतुल क़ाफ पढ़े, और दूसरी रकअत में जब सज्दे से खड़ा होगा तो तक्बीर कहते हुए खड़ा होगा, फिर खड़े होने के बाद पांच तक्बीरें कहे, फिर सूरतुल फातिहा और कोई एक सूरत पढ़े। यदि वह पहली रकअत में ''सब्बिहिस्मा'' पढ़ा है तो दूसरी रकअत में ''सूरतुल गाशिया'' पढ़े, और यदि पहली रकअत में ''सूरतुल क़ाफ'' पढ़ा है तो दूसरी रकअत में ''इक़्तरबतिस्साअतो वनशक़्क़ल क़मरो'' पढ़े।